सपनों के-से दिन (गुरदयाल सिंह)

पाठ का सारांश

बच्चों का खेल के प्रति लगाव–लेखक बचपन में अपने साथी ग्रामीण बच्चों को देखता था कि वे फटे-पुराने वस्त्र पहनकर नंगे पाँव खेलने आते थे। बेसुध होकर खेलने से उनके पुराने वस्त्र और भी अधिक फट जाते थे, उनके हाथ-पाँव छिल जाते थे। जब इस हालत में वे घर जाते थे तो माँ, बहन या पिता उन पर तरस न खाते थे, बल्कि उनकी पिटाई करते थे। लेकिन अगले दिन फिर वे खेलने चले आते थे। बच्चों को खेल से इतना लगाव क्यों है? यह बात लेखक की समझ में तब आई, जब उन्होंने बड़े होकर टीचर ट्रेनिंग की और उसमें बाल मनोविज्ञान पढ़ा। खेल बच्चों के लिए उतना ही आवश्यक है, जितना भोजन और वस्त्र।

लेखक के बाल-सखा–लेखक के बाल-सखा अधिकतर उन परिवारों से थे, जो गाँवों से आकर बसे थे। उनमें कुछ आस-पास की गलियों के भी थे। लेखक और उसके साथियों की आदतें एक जैसी थीं। उनमें कुछ तो स्कूल जाते ही न थे, जो जाते थे, वे पढ़ाई से अरुचि होने के कारण बस्ता तालाब में फेंककर आ जाते थे। कुछ के माता-पिता ही उन्हें पढ़ाना आवश्यक नहीं मानते थे। लेखक के मित्र अधिकतर उन परिवारों के थे, जो राजस्थान और हरियाणा से मंडी में व्यापार या दुकानदारी करने आए थे। उनकी भाषा के कुछ शब्द लेखक की समझ में नहीं आते थे, फिर भी खेल में सब एक-दूसरे के भावों को समझ लेते थे।

बचपन में स्कूल की छुट्टियाँ और उनका उपयोग–लेखक के बचपन में स्कूल की डेढ़-दो महीने की गरमियों की छुट्टियाँ पड़ती थीं। उसे उन छुट्टियों के पहले और आखिरी दिनों का फ़र्क अब तक याद है। पहले दो-तीन सप्ताह ननिहाल में जाकर खेल-कूद में बिताए जाते थे। नानी के हाथ से खूब दूध-दही-मक्खन खाते थे। गाँव के तालाब में नहाते और तैरते थे। बाद में जब छुट्टियाँ बीतने लगतीं तो मास्टरों ने छुट्टियों में करने के लिए जो काम दिया था, उसका हिसाब लगाने लगते। हिसाब लगाने में सारी छुट्टियाँ बीत जाती थीं। फिर मास्टरों की पिटाई का डर सताने लगता था। उस समय उन बच्चों को याद करके मन को तसल्ली दे लेते थे, जो स्कूल का काम करने की अपेक्षा मास्टरों की पिटाई खाना अच्छा मानते थे। उनमें से 'ओमा' लेखक को अब तक याद है।

लेखक का स्कूल एवं अध्यापक–लेखक का स्कूल बहुत छोटा था। उसमें केवल नौ कमरे थे। वह अंग्रेज़ी के एच (H) के आकार में बना था। दाईं ओर पहला कमरा हेडमास्टर मदनमोहन शर्मा जी का था। जब वे प्रार्थना स्थल पर आते थे तो बच्चों को कतार में खड़ा देखकर प्रसन्न हो जाते थे। प्रीतमचंद 'पी०टी०' लड़कों की कतार के पीछे खड़े होकर सबको देखते रहते थे। यदि कोई बच्चा इधर-उधर देखता या हिलता-डुलता था तो वे उसकी बुरी तरह धुनाई करते थे। ज़रा-सी गलती करने पर 'खाल खींचने' के मुहावरे को चरित्रार्थ कर दिखाते। हेडमास्टर शर्मा जी का स्वभाव इसके विपरीत था। वे कभी किसी की चमड़ी नहीं उधेड़ते थे। अधिक गुस्सा आने पर वे अपनी आँखें जल्दी-जल्दी झपकाते और उल्टी उँगलियों से एक हल्की-सी चपत बच्चों की गाल पर लगाते थे। इस पर बच्चे सिर झुकाकर हँसने लगते थे।

लेखक की स्काउट में रुचि–वैसे तो लेखक का मन स्कूल जाने को नहीं करता था, लेकिन स्काउट की परेड वह कभी नहीं छोड़ता था। जब पी०टी० साहब नीली-पीली झंडियाँ हाथों में पकड़वाकर वन-टू-थ्री कहते, झंडियाँ

ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ करवाते तो फड़फड़ाती झंडियों के साथ खाकी वर्दियाँ पहने तथा गले में दोरंगे रूमाल लटकाए सब अभ्यास करते थे। कोई गलती न करने पर जब वे 'शाबाश' कहते तो बच्चों को ऐसा लगता जैसे उन्होंने सभी फ़ौजी तमगे जीत लिए हों। धोबी की धुली वर्दी, पालिश किए बूट और जुराब पहनकर जब लेखक परेड करता तो वह अपने को किसी फ़ौजी से कम नहीं समझता था।

लेखक के परिजनों की पढ़ाई के प्रति अरुचि– हेडमास्टर शर्मा जी की लेखक पर बड़ी अनुकंपा थी। वे एक धनाढ्य लड़के की एक साल पुरानी किताबें हर साल लेखक को दे देते थे। यदि वे ऐसा न करते तो लेखक की पढ़ाई तीसरी-चौथी कक्षा में ही छूट जाती; क्योंकि उनके परिवार में किसी की भी दिलचस्पी पढ़ाई में नहीं थी। यद्यपि पढ़ाई का पूरे साल का खर्च दो-तीन रुपया ही था, लेकिन यदि वह यह खर्च घरवालों से माँगता तो वे लेखक को पढ़ाई से हटाकर घर बैठा लेते; अतः वह हेडमास्टर की अनुकंपा से ही अपनी पढ़ाई जारी रख सका।

लेखक को दूसरे विश्वयुद्ध की याद– लेखक को दूसरे विश्वयुद्ध की याद भी आती है। उनकी रियासत पर अंग्रेज़ों का कब्ज़ा था। अंग्रेज़ गाँव के युवकों को फ़ौज में भर्ती करने के उद्देश्य से गाँव में आते थे। वे अपने साथ नौटंकी वालों को लेकर आते थे, जो नाटक के माध्यम से फ़ौज में मिलने वाली सुख-सुविधाएँ युवकों को दिखाते थे और उन्हें भर्ती होने के लिए प्रेरित करते थे। इससे कुछ युवक फ़ौज में भर्ती हो जाते थे। नौटंकी वालों का एक गीत अब तक भी लेखक को याद है।

हेडमास्टर साहब द्वारा पी०टी० साहब को मुअत्तल करना– हेडमास्टर शर्मा जी द्वारा प्रीतमचंद पी०टी० को मुअत्तल करने की बात भी लेखक को याद है। जब लेखक चौथी कक्षा में था। प्रीतमचंद उसे फ़ारसी पढ़ाते थे। उन्होंने फ़ारसी के शब्द-रूप याद करने के लिए दिए। अगले दिन जब वह उन्हें सुनने लगे तो कोई बच्चा नहीं सुना पाया। तब गुस्से में उन्होंने सब बच्चों को धूप में मुर्गा बना दिया। जब हेडमास्टर जी ने यह देखा तो उन्हें बहुत गुस्सा आया। छोटे बच्चों को इतना कठोर दंड देने के अपराध में उन्होंने प्रीतमचंद को मुअत्तल कर दिया।

पी०टी० साहब के विषय में लेखक की धारणा– लेखक बचपन में प्रीतमचंद से घृणा करता था। वह बच्चों के प्रति बहुत क्रूर और संवेदनहीन थे। लेखक की नज़रों में वे घमंडी भी थे; क्योंकि जब हेडमास्टर जी ने उन्हें मुअत्तल कर दिया तो उन पर इसका कोई फ़र्क नहीं पड़ा। वे अपने किराए के मकान में आराम से रहते रहे और अपने पालतू तोतों को बादाम खिलाते रहे। लेखक को एक बात का आश्चर्य होता था कि जो व्यक्ति बच्चों के प्रति इतना क्रूर है, वह तोतों के प्रति इतना स्नेह कैसे रख सकता है।

पाठ के प्रमुख पात्र और उनका परिचय

1. **मास्टर प्रीतमचंद–** • स्कूल के पी०टी० साहब • बहुत सख्त एवं अनुशासन प्रिय • कार्य में कमी सहन न करने वाले • छात्रों को बर्बरतापूर्वक दंड देने वाले • घमंडी • गलती को स्वीकार न करने वाले।
2. **हेडमास्टर मदन मोहन शर्मा–** • शिष्ट, सभ्य एवं कोमल व्यवहार • छात्रों के प्रति संवेदनशील • छात्रों पर अत्याचार न सहने वाले • गलती पर तुरंत कार्यवाई करने वाले।

शब्दार्थ

गुस्सैल = गुस्से वाला। **ट्रेनिंग** = प्रशिक्षण। **बाल-मनोविज्ञान** = बच्चों के मन का विज्ञान। **परचूनिये** = राशन की दुकान वाले। **आढ़तिये** = जो किसानों की फसलों को खरीदते और बेचते हैं। **लंडे** = हिसाब-किताब लिखने की पंजाबी प्राचीन लिपि। **बहियाँ** = खाता। **मुनीमी** = हिसाब-किताब रखने का ज्ञान। **लोकोक्ति** = लोगों के द्वारा कहीं गई उक्ति/बात। **श्रेणी** = कक्षा। **सयाने** = समझदार। **ननिहाल** = नानी के घर। **दुम** = पूँछ। **ढाँढ़स** = धीरज दिलाना/हौसला देना। **हाँड़ी** = मटका। **ठिगने** = छोटे कद का। **बालिश्त** = बित्ता। **घुड़की** = धमकी भरी डाँट। **ठुड्डों** = लात-घुस्से। **खाल उधेड़ना** = कड़ा दंड देना/बहुत अधिक मारना-पीटना। **तमगा** = पदक, मैडल। **डिसिप्लिन** = अनुशासन। **गुडविल** = साख/प्रख्याति। **सतिगुर** = सतगुरु। **फटकारना** = डाँटना। **चाव** = शौक, इच्छा। **ज़िक्र** = चर्चा। **हरफ़नमौला** = सर्वगुण संपन्न, हर क्षेत्र में आगे रहने वाला। **विह्सल** = सीटी। **बूट** = जूते। **शामियाना** = तंबू। **मसखरे** = विदूषक, हँसी-मज़ाक करने वाले व्यक्ति। **रंगरूट** = सेना या पुलिस आदि में नया भर्ती होने वाला सिपाही। **अठे** = यहाँ। **लीतर** = फटे-पुराने खस्ताहाल जूते। **उठै** = वहाँ। **स्वाभाविक** = प्राकृतिक। **आदेश** = आज्ञा। **ज़बानी** = केवल जुबान के द्वारा। **गुर्राए** = गुस्से में चिल्लाना। **चौबारा** = वह कमरा जिसमें चारों ओर से खिड़कियाँ और दरवाज़े हों। **रत्ती भर** = थोड़ी-सी भी। **बिल्ला** = पट्टी या डंडा। **अलौकिक** = अद्भुत या अपूर्व।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : **पी०टी० साहब की 'शाबाश' फ़ौज के तमगों-सी क्यों लगती थी? स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर : पी०टी० साहब बहुत सख्त थे। वे कभी किसी की प्रशंसा नहीं करते थे। ज़रा-सी गलती पर बच्चों की खाल उधेड़ देते थे। उन्हें संतुष्ट करना बहुत मुश्किल था। यही कारण था कि स्काउट परेड में कोई गलती न करने पर जब वे 'शाबाश' कहते तो उनकी वह 'शाबाश' बच्चों को फ़ौज के तमगों-सी लगती थी। उन्हें वह शब्द सुनकर बहुत गर्व और खुशी महसूस होती थी।

प्रश्न 2 : **'कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती'–पाठ के किस अंश से सिद्ध होता है?**

उत्तर : पाठ में एक जगह लेखक ने बताया है कि बचपन में उसके आधे से अधिक साथी राजस्थान तथा हरियाणा से आकर मंडी में व्यापार या दुकानदारी करने आए परिवारों से थे। जब वे बहुत छोटे थे तो उनकी बोली कम समझ में आती थी। उनके कुछ शब्द सुनकर तो हँसी आ जाती थी, परंतु खेलते समय सभी एक-दूसरे की बात खूब अच्छी तरह समझ लेते थे। इससे सिद्ध होता है कि भाषा आपसी व्यवहार में बाधक नहीं होती।

प्रश्न 3 : **स्काउट परेड करते समय लेखक अपने को महत्त्वपूर्ण 'आदमी' फ़ौजी जवान क्यों समझने लगता था?**

उत्तर : लेखक के समय में फ़ौज के सुख-आराम और बहादुरी के दृश्य युवाओं के आकर्षण हुआ करते थे। धोबी की धुली इस्तरी की हुई वर्दी, पालिश किए बूट और जुराब पहनना उस समय के प्रत्येक युवा का सपना हुआ करता था। जब लेखक धोबी की धुली ड्रैस पहनकर, गले में रंगीन रूमाल डालकर और पालिश किए हुए बूट पहनकर परेड में शामिल होता तो उसे अपना सपना साकार होता-सा लगता। जब पी०टी० साहब लेफ़्ट-राइट की आवाज़ या सीटी बजाकर मार्च पास्ट करवाते और उनके कहने पर वह अपने छोटे-छोटे बूटों की एड़ियों पर दाएँ-बाएँ या एकदम पीछे मुड़कर बूटों की ठक-ठक की आवाज़ करते हुए अकड़कर चलता तो स्वयं को विद्यार्थी न समझकर एक महत्त्वपूर्ण 'आदमी' फ़ौजी जवान समझने लगता था।

प्रश्न 4 : ''वर्तमान में विद्यालयों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता को देखते हुए मास्टर प्रीतमचंद जैसे अध्यापकों की आवश्यकता है।'' इस कथन से सहमति या असहमति के संबंध में अपने तर्कसम्मत विचार लिखिए। ***(CBSE 2023)***

उत्तर : ''वर्तमान में विद्यालयों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता को देखते हुए मास्टर प्रीतमचंद जैसे अध्यापकों की आवश्यकता है।''– हम इस कथन से सहमत नहीं हैं। मास्टर प्रीतमचंद का बच्चों को अनुशासन में रखने का तरीका अमानवीय था। वे बच्चों को ठड्डों से मारते थे, मुरगा बनाते थे और उनकी खाल तक उधेड़ देते थे। आज की शिक्षा व्यवस्था में इस प्रकार का शारीरिक दंड देना अपराध है और पूर्णतः प्रतिबंधित है। बच्चों का तन-मन बहुत सुकोमल होता है। शारीरिक दंड का उन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है; अतः आज प्रीतमचंद जैसे अध्यापकों की अवश्यकता नहीं है। आज ऐसे अध्यापकों की आवश्यकता है, जो बच्चों को अनुशासन में रखने के लिए मनोवैज्ञानिक तरीकों का प्रयोग करें और अपने आचरण और सद्व्यवहार से उनमें जीवन-मूल्यों का समावेश करें।

प्रश्न 5 : लेखक अपने छात्र-जीवन में स्कूल से छुट्टियों में मिले काम को पूरा करने के लिए क्या-क्या योजनाएँ बनाया करता था? और उसे पूरा न कर पाने की स्थिति में किसकी भाँति 'बहादुर' बनने की कल्पना किया करता था?

उत्तर : लेखक अपने छात्र-जीवन में स्कूल से छुट्टियों में मिले काम को पूरा करने के लिए तरह-तरह की योजनाएँ बनाया करता था। जैसे– हिसाब के मास्टर जी द्वारा दिए गए 200 सवालों को पूरा करने के लिए रोज़ दस सवाल निकाले जाने पर 20 दिन में पूरे हो जाएँगे, लेकिन खेल-कूद में छुट्टियाँ भागने लगतीं तो मास्टर जी की पिटाई का डर सताने लगता। फिर लेखक रोज़ के 15 सवाल पूरे करने की योजना बनाता। खेल-कूद में दिन बीतते जाते और सवाल ज्यों के त्यों बने रहते। तब उसे छुट्टियाँ बहुत कम लगने लगतीं और दिन बहुत छोटे लगने लगते, इसी के साथ स्कूल का भय भी बढ़ने लगता। ऐसे में लेखक पिटाई से डरने के बावजूद उन लोगों की भाँति बहादुर बनने की कल्पना करने लगता, जो छुट्टियों का काम पूरा करने की बजाय मास्टर जी से पिटाई खाना ही अधिक बेहतर समझते थे।

प्रश्न 6 : लेखक के अनुसार उन्हें स्कूल खुशी से भागे जाने की जगह न लगने पर भी कब और क्यों स्कूल जाना अच्छा लगने लगा?

उत्तर : लेखक के अनुसार बचपन में उसे स्कूल ऐसी जगह नहीं लगती थी, जहाँ खुशी से जाया जाए। लेकिन स्काउट के आकर्षण के कारण उसे स्कूल जाना अच्छा लगने लगा था। जब पी०टी० साहब उनके हाथों में नीली-पीली झंडियाँ पकड़ा देते और वन-टू-थ्री कहकर उन्हें ऊपर-नीचे करवाते तो हवा में लहराती झंडियाँ बहुत अच्छी लगती थीं। कोई गलती न करने पर जब पी०टी० साहब 'शाबाश' कहते तो ऐसा लगता था जैसे फ़ौज के तमगे जीत लिए हों। उन्हें स्काउट की ड्रेस भी बहुत अच्छी लगती थी।

प्रश्न 7 : नई श्रेणी में जाने और नई कापियों और पुरानी किताबों से आती विशेष गंध से लेखक का बालमन क्यों उदास हो उठता था?

उत्तर : लेखक का बालमन उदास होने के निम्नलिखित कारण थे–

(i) नई कक्षा में हर बच्चा नई किताबें लेना चाहता है, लेकिन लेखक को पुरानी किताबें मिलती थीं। इसलिए उसका मन उदास हो जाता था।

(ii) नई कक्षा की पढ़ाई कठिन होगी, यह सोचकर वह उदास हो जाता था।

(iii) नए अध्यापकों की पिटाई का डर उसे निराश कर देता था।

(iv) नए बच्चों से अध्यापकों को जो अपेक्षाएँ होती हैं, उन्हें वह पूरा नहीं कर पाता था। यह भी उसकी उदासी का कारण था।

प्रश्न 8 : पाठ में वर्णित घटनाओं के आधार पर पी०टी० सर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : पी०टी० सर की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(i) **कठोर-सा विचित्र व्यक्तित्व**–पी० टी० सर का कठोर-सा बड़ा विचित्र व्यक्तित्व था। उनकी आँखें बाज़ की तरह तेज़ थीं। ठिगना कद, दुबला-पतला, परंतु गठीला शरीर, माता के दागों से भरा चेहरा, खाकी वर्दी, चमड़े के चौड़े पंजों वाले बूट–सभी कुछ भयभीत करने वाला हुआ करता।

(ii) **अनुशासनप्रिय**–वे अनुशासनप्रिय व कर्तव्यनिष्ठ थे। इसीलिए स्काउट परेड करवाते हुए अनुशासन के भंग हो जाने पर बच्चों को बहुत डाँटते थे; क्योंकि वे बच्चों में कर्मठता व सजगता का विकास करना चाहते थे।

(iii) **संवेदनहीन**–पी०टी० सर में मानवीय संवेदनाएँ बिलकुल नहीं थीं, तभी तो कक्षा चौथी के बच्चों के साथ शब्द-रूप याद न करने पर बड़ी बर्बरता से पेश आए थे।

(iv) **अनुशासनहीनता को अक्षम्य मानने वाले**– पी०टी० सर की दृष्टि में अनुशासनहीनता अक्षम्य थी, प्रार्थना के समय सभी लड़के अपने-अपने कद के अनुसार सीधे खड़े होते थे। यदि कोई भी लड़का उन्हें हिलता दिखाई देता तो उसे न केवल बुरी तरह से डाँटते थे, बल्कि 'खाल खींचने' के मुहावरे को भी चरित्रार्थ करते थे।

(v) **पक्षी-प्रेमी**–वे छोटे-छोटे बच्चों से तो कठोरता से पेश आते थे, परंतु पक्षियों से बहुत प्यार करते थे, तभी तो अपने पाले हुए तोतों को बादाम खिलाते थे तथा उनसे बड़े प्रेम से बातें करते हुए अपना समय बिताते थे।

प्रश्न 9 : 'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर लिखिए कि मास्टर प्रीतमचंद जैसे अध्यापकों को मुअत्तल किए जाने को आप कहाँ तक उचित मानते हैं और क्यों। पक्ष या विपक्ष में तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। ***(CBSE 2023)***

उत्तर : मास्टर प्रीतमचंद बहुत ही कठोर एवं सख्त स्वभाव के अध्यापक थे। अनुशासन के लिए विद्यार्थियों की पिटाई करने में उनके मन में तनिक भी दया या संकोच का भाव नहीं आता था। एक बार शब्द-रूप याद न होने के कारण उन्होंने चौथी कक्षा के छोटे-छोटे बच्चों को मुरगा बना दिया। हेडमास्टर शर्मा जी ने जब उनका यह अमानवीय व्यवहार देखा तो बहुत क्रोधित हुए और उन्होंने पी०टी० साहब को मुअत्तल कर दिया। हमारे विचार से उनका निलंबन उचित था; क्योंकि छोटे-छोटे बच्चों को शारीरिक दंड देना अमानवीय है। अध्यापक की कठोरता का बच्चों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है और बहुत-से बच्चे स्कूल ही छोड़ देते हैं; अतः यह एक गंभीर अपराध है। ऐसे अध्यापक को शिक्षा के क्षेत्र से बाहर कर देना चाहिए; अतः हेडमास्टर शर्मा जी ने पी०टी० साहब को मुअत्तल करके सराहनीय कार्य किया।

प्रश्न 10 : 'सपनों के से दिन' पाठ के आधार पर बताइए कि स्कूल की छुट्टियों के शुरू और आखिरी दिनों में बच्चों की दृष्टि में क्या अंतर होता था? क्या यही स्थिति आपकी भी होती है? अपने विचार लिखिए। ***(CBSE SQP 2023-24)***

उत्तर : स्कूल की छुट्टियों के शुरू और आखिरी दिनों में बच्चों की दृष्टि में बहुत अंतर होता था। छुट्टियाँ शुरू होते ही बच्चे छुट्टियों का काम समाप्त करना चाहते थे, लेकिन फिर यह सोचकर कि अभी समय बहुत है बाद में कर लेंगे, काम को छोड़ देते थे। इस प्रकार पहले दो-तीन सप्ताह खेल-कूद में बिता देते थे। माँ के साथ ननिहाल चले जाते थे। वहाँ खूब खेल-कूद और मस्ती करते थे। आखिरी दिनों में जब छुट्टियाँ बीतने लगतीं तो डर बढ़ने लगता था। छुट्टियों में मिले काम का हिसाब लगाते तो स्कूल की पिटाई का डर सताने लगता था। इस प्रकार छुट्टियों का आखिर का समय डर में बीतता था।

हमारी स्थिति ऐसी नहीं होती है। हम छुट्टियों के शुरू के दिनों में ही अपना स्कूल का काम पूरा कर लेते हैं और बाद में खेल-कूद करते हैं या माता-पिता के साथ कहीं घूमने जाते हैं।

प्रश्न 11 : विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए पाठ में अपनाई गई युक्तियों और वर्तमान में स्वीकृत मान्यताओं के संबंध में अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर : पाठ में विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए डाँटना, खाल उधेड़ने की धमकी देना, कान पकड़वाना, डंडे से पिटाई करना आदि कठोर युक्तियाँ अपनाई गई हैं। वर्तमान में ये युक्तियाँ स्वीकृत नहीं हैं। बच्चों को शारीरिक दंड देना आज कानूनी अपराध है। आज विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए उन्हें प्यार से समझाया जाता है, माता-पिता का सहयोग लिया जाता है, विशेषज्ञों से उनकी काउंसिलिंग कराई जाती है। छात्रों को परियोजना कार्यों में लगाया जाता है और अधिक अनुशासनहीनता करने पर आर्थिक या विद्यालय-निष्कासन का दंड दिया जाता है।

प्रश्न 12 : आज की शिक्षा-व्यवस्था में विद्यार्थियों को अनुशासित बनाए रखने के लिए क्या तरीके निर्धारित हैं? पाठ में अपनाई गई विधियाँ आज के संदर्भ में कहाँ तक उचित लगती हैं? जीवन-मूल्यों के आलोक में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर : आज की शिक्षा-व्यवस्था में विद्यार्थियों को अनुशासित बनाए रखने के लिए अनेक मनोवैज्ञानिक तरीके अपनाए जाते हैं। उन्हें प्यार से समझाया जाता है। समय-समय पर अभिभावकों को विद्यार्थियों के स्वभाव और शैक्षिक प्रगति की सूचना दी जाती है। बच्चों को अनेक मनोरंजक और रचनात्मक गतिविधियों में व्यस्त रखा जाता है। उन्हें अनेक उत्तरदायित्व सौंपे जाते हैं। अधिक उद्दंड बच्चों की विशेषज्ञों से काउंसिलिंग कराई जाती है। कभी-कभी आर्थिक दंड भी दिया जाता है।

पाठ में अपनाई गई विधियाँ आज के संदर्भ में उचित नहीं हैं; क्योंकि वे अत्यंत कठोर और अमानवीय हैं। आज का विद्यार्थी और अभिभावक दोनों बहुत जागरूक हैं। वे शारीरिक दंड को पसंद नहीं करते। कानून की दृष्टि से भी ये विधियाँ अपराध हैं।

प्रश्न 13 : 'सपनों के-से दिन' पाठ में हेडमास्टर शर्मा जी की बच्चों को मारने-पीटने वाले अध्यापकों के प्रति क्या धारणा थी? जीवन-मूल्यों के संदर्भ में उसके औचित्य पर अपने विचार लिखिए। ***(CBSE 2015)***

उत्तर : हेडमास्टर मदनमोहन शर्मा जी बच्चों के प्रति बहुत उदार और सवंदेनशील थे। वे बालमन को अच्छी प्रकार समझते थे। बहुत गुस्सा होने पर भी वे बच्चों को बहुत हल्की-सी चपत लगाते थे, जिसके लगने पर बच्चे सिर झुकाकर हँसने लगते थे। बच्चों को मारने-पीटने वाले अध्यापकों को वे पसंद नहीं करते थे। उन्होंने चौथी कक्षा के बच्चों को बर्बरतापूर्वक दंड देने वाले पी०टी० साहब प्रीतमचंद को पहले डाँटा और फिर मुअत्तल कर दिया। बच्चे तन-मन से बहुत कोमल और संवदेनशील होते हैं। गलती करना तो बच्चों का स्वभाव होता है। इसके लिए उन्हें कठोर शारीरिक दंड देना अमानवीय है। बच्चों को शारीरिक दंड देना आज कानूनन अपराध है। यह मानव-मूल्यों के विरुद्ध है। अतः हेडमास्टर शर्मा जी ने बच्चों को कठोर दंड देने वाले पी०टी० साहब के साथ जो व्यवहार किया और ऐसे अध्यापकों के प्रति उनकी जो धारणा थी, वह हमारे विचार से उचित है।

प्रश्न 14 : लेखक को किसके सहारे पढ़ाई जारी रखनी पड़ी? आप गरीब बच्चों की पढ़ाई जारी रखने के लिए विद्यालयों को क्या सुझाव देना चाहेंगे? ***(CBSE 2015)***

उत्तर : लेखक गुरदयाल सिंह के माता-पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, इसलिए वे शिक्षा पर अधिक धन खर्च नहीं कर सकते थे। लेखक को हर वर्ष हेडमास्टर साहब शर्मा जी किसी समृद्ध परिवार के बच्चे की किताबें लाकर दे दिया करते थे। कॉपियों, पेंसिलों, होल्डर या स्याही-दवात पर मुश्किल से एक रुपया वर्षभर का खर्च आता था। तब एक रुपये का भी बहुत महत्त्व था। लेखक को हेडमास्टर शर्मा जी का सहारा न मिलता तो वे भी अपनी पढ़ाई जारी नहीं रख पाते।

गरीब बच्चों की पढ़ाई जारी रखने में विद्यालय अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। विद्यालय ऐसे बच्चों के लिए पुस्तकों, कॉपियों एवं पुरानी या सस्ती वेशभूषा आदि की व्यवस्था कर सकते हैं (वैसे वर्तमान में सरकारी प्राथमिक स्कूलों में बालकों के लिए ये सभी व्यवस्थाएँ सरकार द्वारा की जाती हैं; क्योंकि हमारे देश में 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए अनिवार्य एवं मुफ़्त शिक्षा देने का प्रावधान है)।

विद्यालयों की ओर से बच्चों के माता-पिता को जागरूक बनाने के प्रयास भी किए जाने चाहिए, जिससे वे शिक्षा को बोझ न समझकर उसके महत्त्व को पहचानें। गरीब बालकों के लिए विद्यालय की ओर से छात्रवृत्ति आदि की व्यवस्था भी की जानी चाहिए, जिससे बालकों की शिक्षा में कोई बाधा न आए। यदि विद्यालय की ओर से इस प्रकार के सार्थक प्रयास किए जाएँ तो गरीब बच्चे अवश्य पढ़ सकेंगे।

प्रश्न 15 : प्राचीन और आधुनिक शिक्षा-प्रणाली को पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। ***(CBSE 2016)***

उत्तर : प्राचीन शिक्षा-प्रणाली—प्राचीन समय में अभिभावक बच्चों की शिक्षा को अनिवार्य नहीं मानते थे। पाठ में जब अध्यापक अभिभावकों से बच्चों को स्कूल भेजने के लिए कहते हैं तो वे कहते हैं कि हमें अपने बच्चों को कोई तहसीलदार नहीं बनाना है। इसी प्रकार लेखक के अभिभावक उसे पढ़ाई का खर्च नहीं देते; क्योंकि उनकी नज़रों में पढ़ाई आवश्यक नहीं है। पहले बच्चों को पूर्णतः अध्यापक के भरोसे छोड़ दिया जाता था। अध्यापकों का बच्चों को दंड देने का ढंग भी अमानवीय था। शिक्षा में गतिविधियाँ बहुत कम थीं। सहशिक्षा का प्रचलन भी नहीं था।

आधुनिक शिक्षा-प्रणाली—आधुनिक समय में अभिभावक बच्चों की शिक्षा के प्रति बहुत जागरूक हैं। वे अध्यापकों को इस कार्य में पूरा सहयोग देते हैं। अब विद्यालय में अनेक प्रकार की गतिविधियाँ कराई जाती हैं। विद्यार्थियों को शारीरिक दंड देना कानूनन अपराध है। आज सहशिक्षा का भी प्रचलन है।

प्रश्न 16 : बचपन में लेखक के साथ खेलने वाले बच्चों की स्थिति का वर्णन करते हुए बताइए कि क्या आपको भी खेलने पर माता-पिता की डाँट पड़ती है? आपके विचार से बच्चों को खेल से वंचित रखने वाले कारण क्या हैं?

उत्तर : लेखक के साथ खेलने वाले सभी बच्चों की स्थिति एक जैसी होती थी—नंगे पाँव, फटी-मैली-सी कच्छी, टूटे बटनों वाला फटा कुर्ता और बिखरे बाल। जब वे बेसुध होकर खेलते तो उनके घुटने छिल जाते थे और पहले से फटे कपड़े और भी तार-तार हो जाते थे। इस हालत में जब वे घर जाते तो घरवालों के द्वारा उनकी खूब पिटाई होती। लेकिन अगले दिन वे फिर खेलने आ जाते थे; क्योंकि बच्चा खेल के बिना नहीं रह सकता। खेलने पर हमारी पिटाई तो नहीं होती, लेकिन कभी-कभी डाँट अवश्य पड़ जाती है।

हमारे विचार से बच्चों को खेल से वंचित रखने वाले कारण निम्नलिखित हैं—

(i) गाँवों और शहरों में खेल के मैदान न होना।
(ii) बच्चों को खेल की सामग्री उपलब्ध न होना।
(iii) पढ़ाई के बोझ के कारण खेल के लिए समय का अभाव।
(iv) खेल संस्थाओं और क्लबों की कमी।
(v) अभिभावकों की अरुचि।
(vi) खेलों का रोज़गारपरक न होना।

प्रश्न 17 : प्रायः अभिभावक बच्चों को खेल-कूद में ज़्यादा रुचि लेने पर रोकते हैं और समय बरबाद न करने की नसीहत देते हैं। बताइए—

(क) खेल आपके लिए क्यों ज़रूरी हैं?

उत्तर : खेल बच्चों के लिए ज़रूरी हैं; क्योंकि इनसे बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास होता है। खेल से बच्चों में सहयोग, संघर्ष, साहस, धैर्य, नेतृत्व-क्षमता और प्रतिस्पर्धा में भाग लेने आदि गुणों का विकास होता है, जो जीवन में सफलता पाने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। यदि खेल के क्षेत्र में सफलता मिल जाती है तो व्यक्ति अपना ही नहीं, अपने परिवार, समाज और देश का नाम रोशन कर देता है। उसे धन-मान सबकुछ प्राप्त हो जाता है।

(ख) आप कौन-से ऐसे नियम-कायदों को अपनाएँगे, जिससे अभिभावकों को आपके खेल पर आपत्ति न हो?

उत्तर : अभिभावकों को हमारे खेलने पर आपत्ति न हो, इसके लिए हम निम्नलिखित नियम-कायदे अपनाएँगे—

(i) खेल के साथ-साथ पढ़ाई पर भी ध्यान देंगे।
(ii) अभिभावकों की अनुमति लेकर खेलने जाएँगे।
(iii) खेलते समय अपनी और दूसरों की सुरक्षा का ध्यान रखेंगे।
(iv) खेल में लड़ाई-झगड़ा नहीं करेंगे।
(v) गली या घर में ऐसा खेल नहीं खेलेंगे, जिससे दूसरों को नुकसान हो।

प्रश्न 18 : बचपन की यादें मन को गुदगुदाने वाली होती हैं, विशेषकर स्कूली दिनों की। अपने अब तक के स्कूली जीवन की खट्टी-मीठी यादों को लिखिए।

उत्तर : बचपन जीवन की सबसे आनंदपूर्ण अवस्था है। इसकी खट्टी-मीठी यादें जीवनभर मन को गुदगुदाती रहती हैं। विशेषकर विद्यार्थी जीवन में साथियों के साथ खेलना-कूदना, लड़ना-झगड़ना, रूठना-मनाना, अध्यापकों द्वारा डाँटना-प्रोत्साहित करना आदि बातें जीवनभर याद रहती हैं। स्कूली जीवन की खट्टी-मीठी यादें सबकी अलग-अलग होती हैं; अतः सभी विद्यार्थी अपने-अपने अनुभव के आधार पर अपनी यादों के विषय में लिखें।

प्रश्न 19 : बच्चों के लिए खेल और पढ़ाई की व्यवस्था करना अभिभावकों का कर्तव्य है। क्या लेखक और उसके साथियों के अभिभावकों ने यह कर्तव्य निभाया? इस विषय में आपके अभिभावकों की क्या भूमिका है?

उत्तर : बच्चों के लिए खेल और पढ़ाई की व्यवस्था करना अभिभावकों का परम कर्तव्य है। शिक्षा और खेल बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है। पाठ में लेखक और उसके साथियों के अभिभावक इस कर्तव्य को निभाने में पूर्णतः असफल रहे। खेलने जाने पर लेखक और उसके साथियों के अभिभावक उनकी बुरी तरह पिटाई करते थे। पढ़ाई के विषय में वे कहते थे कि हमें अपने बच्चों को पढ़ाकर तहसीलदार नहीं बनाना है। लेखक के अभिभावक उसकी शिक्षा पर होने वाला दो-तीन रुपये साल का खर्च भी उठाने को तैयार नहीं थे; क्योंकि उनकी उसे पढ़ाने में कोई रुचि नहीं थी।

हमारे अभिभावक इस विषय में अपना कर्तव्य अच्छी प्रकार निभा रहे हैं। वे हमें अच्छे विद्यालय में शिक्षा दिलवा रहे हैं। हमारे पास सभी प्रकार की शिक्षा-सामग्री है। विद्यालय के साथ-साथ हमारे लिए घर पर भी खेल की सुविधाएँ हैं। हमारी शिक्षा और खेल पर अभिभावक न केवल पूरा खर्च कर रहे हैं, बल्कि सभी प्रकार का सहयोग भी हमारे साथ करते हैं। किसी विषय में कठिनाई आने पर पहले तो स्वयं उसके समाधान का प्रयास करते हैं और स्वयं समाधान न कर पाने पर ट्यूशन आदि के रूप में विषय-विशेषज्ञों की सेवा भी उपलब्ध कराते हैं। परियोजना-कार्यों में तो वे हर समय हमारे साथ लगे रहते हैं।

प्रश्न 20 : बच्चे मन के सच्चे होते हैं। भाषा, धर्म, जाति, क्षेत्र आदि का भेदभाव उनके परस्पर मेल या खेल में बाधक नहीं हो सकता। पाठ के आधार पर तर्कसहित उत्तर दीजिए।

उत्तर : यह बात सत्य है कि बच्चों का मन भाषा, धर्म, जाति या क्षेत्र के भेदभाव से रहित होता है। उनके पारस्परिक मेल या खेल में ये चीज़ें बाधक नहीं होतीं। पाठ में लेखक बताता है कि बचपन में उसके आधे से अधिक साथी राजस्थान और हरियाणा से आकर मंडी में व्यापार या दुकानदारी करने वाले परिवारों से थे। मातृभाषा अलग होने पर उनकी बातें बहुत कम समझ में आती थीं। उनके कुछ शब्द तो ऐसे थे, जिन्हें सुनकर लेखक को हँसी आ जाती थी। लेकिन जब वे खेलते थे तो सब एक-दूसरे की बातें समझ जाते थे। भाषा, धर्म और जाति आदि की उनके मेल या खेल में कोई बाधा नहीं थी।

प्रश्न 21 : पहले समय में बच्चे अपनी छुट्टियाँ कैसे बिताते थे? आज उसमें क्या परिवर्तन आ गया है? तर्कसंगत उत्तर दीजिए।

उत्तर : पहले समय में बच्चे अपनी प्रारंभ की आधी छुट्टियाँ ननिहाल में बिताते थे। वहाँ खूब खेलते-कूदते और मस्ती करते थे। नानी के हाथ से दूध-दही और मक्खन खाते थे। नानी का वात्सल्य उनके जीवन को मधुरता और आनंद से भर देता था। बाद की आधी छुट्टियाँ

वे स्कूल का काम पूरा करने की योजना बनाने में ही बिता देते थे। उनका काम पूरा नहीं होता था और उन्हें अध्यापकों की मार का डर सताने लगता था। इस प्रकार बाद की आधी छुट्टियाँ चिंता और डर में बीतती थीं।

आज छुट्टियों में बच्चों की ननिहाल जाने की परंपरा प्रायः समाप्त हो गई है। अब बच्चे छुट्टियों में माता-पिता के साथ दो-चार दिन के लिए किसी पर्यटन-स्थल की सैर के लिए चले जाते हैं। कुछ बच्चे विद्यालयों द्वारा आयोजित 'समरकैंप' में विभिन्न गतिविधियों में भाग लेते हैं। अब बच्चों को स्कूल से बहुत अधिक 'परियोजना कार्य' मिलता है। उनकी अधिकतर छुट्टियाँ इसे पूरा करने में ही बीत जाती हैं। अब बच्चों की छुट्टियाँ पहले जैसी मस्ती में नहीं बीततीं।

प्रश्न 22 : ''स्कूल हमारे लिए ऐसी जगह न थी जहाँ खुशी से भागे जाएँ'' फिर भी लेखक और साथी स्कूल क्यों जाते थे? आज के स्कूलों के बारे में आपकी क्या राय है? क्यों? विस्तार से समझाइए। ***(CBSE 2019)***

उत्तर : लेखक के अनुसार बचपन में उसे और उसके साथियों को स्कूल ऐसी जगह नहीं लगती थी, जहाँ खुशी से जाया जाए। लेकिन स्काउट के आकर्षण के कारण उन्हें स्कूल जाना अच्छा लगने लगा था। जब पी०टी० साहब उनके हाथों में नीली-पीली झंडियाँ पकड़ा देते और वन-टू-थ्री कहकर उन्हें ऊपर-नीचे करवाते तो हवा में लहराती झंडियाँ बहुत अच्छी लगती थीं। कोई गलती न करने पर जब पी०टी० साहब 'शाबाश' कहते तो ऐसा लगता था जैसे फ़ौज के तमगे जीत लिए हों। उन्हें स्काउट की ड्रेस भी बहुत अच्छी लगती थी।

आज स्कूल ऐसी जगह नहीं है जहाँ खुशी से न जाया जाए। आज बच्चे खुशी-खुशी स्कूल जाते हैं। इसका कारण यह है कि आज स्कूलों में बच्चों को किसी प्रकार का दंड नहीं दिया जाता। वहाँ अनेक मनोरंजक गतिविधियाँ कराई जाती हैं। अवकाश में बच्चों के लिए शिविरों का आयोजन किया जाता है, जिनमें संगीत, नृत्य, नाटक, कला आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। अतः आज बच्चे अवकाश के दिनों में भी खुशी से विद्यालय जाते हैं।

प्रश्न 23 : लेखक गुरदयाल सिंह अपने छात्र-जीवन में छुट्टियों के काम को पूरा करने के लिए योजनाएँ तैयार करते थे। क्या आप की योजनाएँ लेखक की योजनाओं से मेल खाती हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए। ***(CBSE SQP 2021 Term-2)***

उत्तर : लेखक अपने छात्र-जीवन में स्कूल से छुट्टियों में मिले काम को पूरा करने के लिए तरह-तरह की योजनाएँ बनाया करता था। जैसे—हिसाब के मास्टर जी द्वारा दिए गए 200 सवालों को पूरा करने के लिए रोज दस सवाल निकाले जाने पर 20 दिन में पूरे हो जाएँगे, लेकिन खेल-कूद में छुट्टियाँ भागने लगतीं तो मास्टर जी की पिटाई का डर सताने लगता। फिर लेखक रोज़ के 15 सवाल पूरे करने की योजना बनाता। खेल-कूद में दिन बीतते जाते और सवाल ज्यों-के-त्यों बने रहते। तब उसे छुट्टियाँ बहुत कम लगने लगतीं और दिन बहुत छोटे लगने लगते, इसी के साथ स्कूल का भय भी बढ़ने लगता। ऐसे में लेखक पिटाई से डरने के बावजूद उन लोगों की भाँति बहादुर बनने की कल्पना करने लगता, जो छुट्टियों का काम पूरा करने की बजाय मास्टर जी से पिटाई खाना ही अधिक बेहतर समझते थे।

हमारी योजनाएँ लेखक की योजनाओं से मेल नहीं खातीं। अब ननिहाल जाने की परंपरा समाप्त हो गई है। बच्चों को छुट्टियों में जो कार्य दिया जाता है, उसकी जानकारी विद्यालय वाले माता-पिता को भी देते हैं। अतः माता-पिता बच्चों को नियमित रूप से छुट्टियों का कार्य करने के लिए बाध्य करते हैं। विद्यालय छुट्टियों में भी अभिभावकों और बच्चों से संपर्क बनाए रखते हैं। हम पाठ के बच्चों की तरह कार्य पूर्ण करने की योजनाएँ ही नहीं बनाते, बल्कि नियमित रूप से योजनाओं के अनुसार कार्य पूर्ण भी करते हैं।

प्रश्न 24 : 'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर बताइए कि लेखक की हैरानी का क्या कारण था और क्यों? ***(CBSE 2022 Term-2)***

उत्तर : 'सपनों के-से दिन' पाठ के लेखक की हैरानी का कारण यह था कि बच्चों को खेलना क्यों इतना अच्छा लगता है कि बुरी तरह पिटाई होने पर भी फिर खेलने चले आते हैं। बचपन में लेखक के साथी बच्चों के कपड़े खेल में फट जाते थे और चोट लगने से शरीर भी लहूलुहान हो जाता था। ऐसी हालत में जब वे घर जाते थे तो माता-पिता बुरी तरह उनकी पिटाई करते थे और अगले दिन खेलने न जाने की हिदायत देते थे, लेकिन बच्चे अगले दिन फिर खेलने आ जाते थे। लेखक की हैरानी तब दूर हुई, जब उन्होंने अध्यापक बनने के लिए ट्रेनिंग की और वहाँ बाल-मनोविज्ञान पढ़ा। इसे पढ़कर लेखक ने जाना कि बच्चों के लिए खेलना उतना ही आवश्यक है, जितना भोजन और वस्त्र।